फैमिलीज़ ऑफ़ जॉय फाउंडेशन

एडॉप्शन की नयी सोच

महिलाओं को प्राथमिकता – सही या गलत

कुछ महीने पहले CARA एक योजना की घोषणा की इसमें अकेली महिलाओं को गोद लेने के लिए प्रतीक्षा सूची में 6 महीने की प्राथमिकता मिलेगी. CARA का यह मानना था किसकी वजह से अकेली महिलाओं को गोद लेने में आसानी होगी और समाज को भी एक सकारात्मक संदेश मिलेगा. यह एक लोकप्रिय कदम जरूर हो सकता है किंतु तर्कसंगत नहीं.

CARA में करीब 16000 से भी अधिक अभिभावक गोद लेने के लिए प्रतीक्षारत हैं. इनमें से 80% 2 वर्ष से छोटे बच्चों को गोद लेना चाहते हैं जिनकी संख्या 300 से भी कम है. यदि हम माने कि अकेली महिलाएं 1% भी हो तो आधे बच्चे तो इन्हीं को प्राप्त हो जाएंगे और बाकी माता पिताओं की प्रतीक्षा 6 महीने और बढ़ जाएगी.

दूसरे, अकेली महिलाओं को प्राथमिकता देने का मतलब यह भी है कि आप एक बच्चे को अकेले अभिभावक के घर में प्राथमिकता से भेज रहे हैं, ना कि माता और पिता दोनों से परिपूर्ण परिवार में. यह अपने आप में संकटदायी, चुनौतियों से भरा और अनुचित कदम है. अगर अकेली महिला आमतौर की प्रतीक्षा सूची में बच्चे को गोद लेती है तो ज्यादातर बच्चे दोनों तरह के परिवारों में जा सकते हैं. किंतु अकेली महिला को प्राथमिकता देने के कारण ज्यादातर बच्चे अकेली महिला के परिवार में जा रहे हैं.

तीसरे, ज्यादातर महिलाओं ने माना कि उनका अकेले रह कर बच्चे को गोद लेना एक जीवनशैली निर्णय है और उसमें प्रतीक्षा करना कोई खास कष्टदायक नहीं है. उसकी तुलना में गोद लेने की प्रक्रिया में ही भेदभाव होना ज्यादा कष्टदायक है, जिसकी और CARA ने कोई ध्यान नहीं दिया है. प्रतीक्षा सूची में प्राथमिकता के बावजूद इन महिलाओं को प्रक्रिया में अनेकों बार भेदभाव और चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिससे कई अन्य अकेली महिलाओं के बच्चे गोद लेने के निर्णय पर असर पड़ा, ना की प्राथमिकता मिलने वाली योजना का.

मोटे मोटे तौर पर या योजना सिर्फ एक लोकप्रिय मुखौटा बनकर रह गई है या यूं कहिए कि किसी विशिष्ट महिला वर्ग को प्राथमिकता देने के औचित्य से घोषित की गई थी. परिवारों, बच्चों और समाज के बड़े वर्गों का तो इससे कोई लाभ

होता नहीं दिखता. नवीनतम सूत्रों के अनुसार यह योजना और कुछ महीनों तक लागू रहेगी और यह हजारों माता-पिताओं की विडंबना ही है क्यों उनकी प्रतीक्षा इस बेतुके निर्णय के कारण भरी रहेगी.